मशरूम की खेती

5	मशरूम की बीजाई (स्पॉनिंग)
6	मशरूम में केसिंग मिश्रण
7	मशरूम की खेती में ट्रेनिंग ज़रूरी
8	मशरूम की खेती से आमदनी

मशरूम की बीजाई (स्पॉनिंग)

मशरुम उत्पादन के लिए तैयार की गई शेड/झोपड़ी में बनी स्लैबों या बेड पर पॉलिथीन सीट रखने के बाद 6-8 इंच मोटी कंपोस्ट खाद की परत बिछा दे, इसके बाद ऊपर मशरुम के बीज/स्पॉन को मिला दें। सौ किलोग्राम कंपोस्ट खाद की बीजाई के लिए 500-750 ग्राम बीज की ज़रूरत पड़ती है स्पॉन की बीजाई करने के बाद उसे पॉलिथीन सीट से ढंक देना चाहिए।

मशरूम में केसिंग मिश्रण

वह कोई भी पदार्थ जो पानी को जल्दी अवशोषित करके धीरे-धीरे छोड़े और भुरभुरा

हो, उसे केसिंग के लिए उपयुक्त समझा जाता है। जानकारों के मुताबिक, चावल के छिलके की राख (बायलर की राख) और जोहड़ की मिट्टी को 1:1 भार के अनुपात में तैयार करके अच्छी गुणवत्ता वाला केसिंग प्राप्त होता है। केसिंग मिश्रण का निर्जीवीकरण करने के लिए 2-3 प्रतिशत फॉर्मलीन का घोल डालकर पॉलिथीन सीट से 3-4 दिन के लिए ढंक देना चाहिए। केसिंग मिश्रण से पॉलिथीन सीट को हटाकर इसे पलटना चाहिए, जिससे फॉर्मलीन की गंध बाहर निकाल जाए। जब खाद के ऊपर स्पॉन का कवक जाल पूरी तरह से स्थापित हो जाए तो उसके ऊपर केसिंग की 1.0-1.5 इंच मोटी परत बिछाई जाती है। केसिंग मशरुम की वानस्पतिक वृद्धि में मदद करता है। केसिंग करने के बाद खाद में उचित मात्रा में नमी बनी रहती है। केसिंग न करने की स्थिति में मशरुम बहुत ही कम मात्रा में

निकलते हैं, जिससे उत्पादकों को नुकसान होता है।

मशरूम की खेती में ट्रेनिंग ज़रूरी

मशरूम की खेती से अच्छा मुनाफा कमाने के लिए ज़रूरी है कि आप प्रशिक्षण लेने के बाद ही इस काम की शुरुआत करें। सरकार भी मशरूम के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चला रही है। मशरूम की खेती की ट्रेनिंग के लिए किसान अपने नज़दीकी कृषि विज्ञान केंद्र या फिर कृषि विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण ले सकते हैं। यही नहीं, ICAR-मशरूम अनुसंधान निदेशालय द्वारा मशरूम की खेती पर ऑनलाइन ट्रेनिंग भी दी जा रही है, जिसकी पूरी जानकारी आप इस लिंक dmrsolan.icar.gov.in पर जाकर देख सकते हैं।

मशरूम की खेती से आमदनी

मशरूम के उत्पादन में लागत कम आती है, क्योंकि इसके लिए इस्तेमाल होने वाला भूसा सस्ता मिलता है। एक साल में सिर्फ एक कमरे में मशरूम का उत्पादन करके आप 3 से 4 लाख रुपए की कमाई आसानी से कर सकते हैं। जबकि इस पर लागत 50 से 60 हज़ार रुपए आएगी। बड़े पैमाने पर उत्पादन करने पर मुनाफा और अधिक होगा। मार्केट में मशरूम 150 से 300 रुपए प्रति किलो के हिसाब से बिकता है। इसकी कीमत किस्म और गुणवत्ता के हिसाब से तय होती है।